<u>षष्टम विधान सभा के प्रथम सत्र का माननीय अध्यक्ष का पहला सम्बोधन।</u>

माननीय मुख्यमंत्री जी, माननीय मंत्री गण, सभी दलों के माननीय नेता गण, सभी माननीय सदस्य गण, मुझे सर्वसम्मति से पुनः इस सदन का अध्यक्ष के रूप में दायित्व निर्वहन अवसर प्रदान किया। इसके लिए लिए मैं आप सबों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं माननीय मुख्यमंत्री, श्री हेमंत सोरेन जी और सभी दलों के नेताओं और माननीय सदस्यों का जिन्होने मेरे प्रति विश्वास व्यक्त किया उनके लिए भी मैं आपका आभारी हूँ।

छठी विधान सभा का आम चुनाव लोकतन्त्र का महा उत्सव था, जिसमे हमारे राज्य में भौगलिक विविधताएँ, प्रतिकूल मौसम और कई अन्य चुनौतियों के बावजूद जिस उत्साह से राज्य की एक करोड़ 76 लाख से अधिक मतदाताओं ने भाग लिया। मैं सदन की ओर से राज्य के जनता के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। झारखंड विधान सभा आम चुनाव यहाँ की जन्ता ने बढ़ चढ़ के हिस्सा लिया और पूरे राज्य में 67 प्रतिशत से अधिक मतदाताओं ने भाग लिया। मैं सदन की ओर से उनका आभार व्यक्त करता हूँ, विशेषकर मेरे विधान सभा क्षेत्र में काफी उत्साह से और बढ़ चढ़ कर भाग लिया और राज्य में अधिकतम 81% मतदाताओं ने मतदान किया। इन सबों को तहे दिल से आभार व्यक्त करता हूँ।

माननीय मुख्यमंत्री श्री हेमंत सोरेन जी के नेतृत्व में लगातार दूसरी बार सरकार बनी है। गत वर्षों में राज्य की जनता की उपेक्षायें, आशाएँ और आकांक्षाएँ बढ़ी हैं इसे बेहतर तरीके से पूरा करने के लिए समूहिक प्रयास आवश्यक है। मैं उम्मीद करता हूँ कि चुनावी प्रतिस्पर्धा से उत्पन्न कटुता को भूलकर राज्य के नव निर्माण एवं आगे बढ़ाने में सभी माननीय सदस्य मिलकर रचनात्मक कार्य करेंगे।

माननीय सदस्यगण छठी विधान सभा एक नए विजीन, नए संकल्प की सभा होनी चाहिए, यह सभा हमारे रचनात्मक चिंतन, नूतन विचारों की सभा होनी चाहिए। यह सभा उच्च कोटी की संसदीय परंपरा स्थापित करे। पक्ष, प्रतिपक्ष की मर्यादित सहमति/असहमति की अभिव्यक्ति परिलक्षित हो, राज्य के महत्वपूर्ण मुद्दो पर गहन एवं सार्थक चर्चा, संवाद हो और राज्य को आगे ले जाने की इच्छा सकती के साथ यह सदन काम करें।

मुझे प्रसन्नता है कि इस सदन में पहली बार 21 नए माननीय सदस्य चुनकर आए हैं, मैं सदन कि ओर से इंका अभिनंदन करता हूँ। मुझे आशा है कि निर्वाचित सदस्य सदन की नियमों, परम्पराओं, और परिपार्टियों का गहन अध्ययन करेंगे और अपने अभिभावक समान वारिष्टों के अनुभव का लाभ उठाकर श्रेष्ठ सदस्य परम्पराओं का पालन करेंगे।

दो सप्ताह पूर्व ही पूरे देश में संविधान दिवस मनाया गया संविधान निर्माण में भूमिका निभाने वाले सभी महान मनीषियों को नमन करता हूँ जिन्होने दलगत भावनाओं निजी विचारधाराओं से ऊपर उठकर हर बिन्दु पर गहन अध्ययन, विचार-विमर्श वाद-विवाद, चर्चा संवाद कर पूरे विश्व में एक अनूठा संविधान बनाया जिसमें समस्त आधुनिक लोकतान्त्रिक परम्पराओं के साथ स्वतन्त्रता आंदोलन के आदर्शों को समाहित किया गया।

मैं सदन के सदस्यों से आग्रह करना चाहूँगा कि लोक कल्याण के ऐसी नीतियाँ बनाए, ऐसे कानून बनाए, ऐसे अधिनियम बनाए जिससे समाज से शोषित, पीड़ित और वंचित वर्गों का उत्थान हो सके और गांधी जी के द्वारा देखे गए सपनों के अनुरूप अंतिम व्यक्ति के जीवन में सामाजिक, आर्थिक उत्थान हो सके।

मैं इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री श्री हेमंत सोरेन जी को धन्यवाद देता हूँ, आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके मार्गदर्शन में सदन में कई लोकतान्त्रिक प्रतिमान गढ़े हैं।

मेरी कोशिश होगी कि मैं सभी माननीय सदस्यों को पर्याप्त समय दूँ, पर्याप्त अवसर दूँ। यह सदन सभी पक्षों के विचारों वाली सदन हों। सभी पक्षो के विचार यहाँ आने चाहिए। सहमति और असहमति हमारे लोकतन्त्र कि ताकत है। हम अलग अलग विचार धाराओं से चुनकर आते हैं हालांकि अलग-अलग विचार धाराओं के बाद भी राज्य का हित सर्वोपरि है।

सदन पक्ष और विपक्ष दोनों से मिलकर चलता है। विपक्ष सरकार का आईना होता है। लोकतन्त्र का यही ताकत है कि सबकी बातें सुनी जाएँ। सहमति से सदन चले और मेरी उपेक्षा है कि मैं सभी सहमति से सदन चलाऊँ। मैं प्रयास करूंगा कि उन्हीं भावनाओं के साथ आप सबका विचार सदन में आयें और मैं निसपक्ष रूप से सदन का संचालन कर सकूँ। परंतु आप सबों से मेरी यह उपेक्षा रहेगी कि सदन निर्वाध रूप से चले।

मैं अपने यहाँ अन्तर्मन से यह कहना चाहता हूँ कि हमलोग यहाँ पर चुनकर आते हैं और जनता की बहुत सारी उपेक्षाओं के साथ चुनकर आते हैं। साढ़े तीन करोड़ जनता की इस सदन से आशाएँ बंधी है कि उनके हित में और उनके लिए इस महापंचायत से समुचित कार्य हो। परंतु यह भी सत्या है कि कई बार गतिरोध के कारण वांछित इष्टतम कार्य नहीं हो पता है, इसलिए मैं आग्रह करना चाहता हूँ कि सदन में गतिरोध न हो। सदन मेओन आलोचना हो, सदन में विचार व्यक्त हो, अभिव्यक्ति हो लेकिन गतिरोध सदन कि परंपरा नहीं है। मई समझता हूँ कि माननीय दिशोम गुरु शिबू शोरेन ने राज्य निर्माण के आंदोलन के समय से ही राजनीतिक एवं सामाजिक रूप से सहनशील, जुझारू, निष्ठावान कार्यकर्ता तैयार करने का प्रयत्न किया है। मुझे उम्मीद है कि इस सदन मे उनके विचारों का प्रतिविम्ब परिलक्षित हो।

मेरा प्रयास रहेगा कि जो संसदीय मर्यादा है उसका पालन करने का दायित्व आपने मुझे दी है और मै उसका पालन आपके सहयोग से करूंगा। कभी कभी सदन कि परंपरा और मर्यादा कायम रखने के लिए कठोर निर्णय भी लेने पड़ते हैं। षष्टम विधान सभा मे मेरी अपेक्षा है कि हम सब लोग एक उच्च कोटी का बेहतर संवाद करें, चर्चा करें। यहाँ कई अनुभवी नेता पुन निर्वाचित होकर आए हैं वहीं कई नव निर्वाचित ऊर्जावान माननीय सदय भी हैं।

षष्टम विधान सभा के लिए माननीय प्रोटेम स्पीकर, प्रोफेसर स्टीफन मराण्डी जी का मैं आभार व्यक्त करता हूँ। मैं आशा करता हूँ जो विचार आपने व्यक्त किया है हम सब मिलकर इस षष्टम विधान सभा में इस सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा को निश्चित रूप से बढ़ाएँगे । पुनः माननीय मुखमंत्री, श्री हेमंत सोरेन जी एवं मंत्रीगण सहित तमाम माननीय सदस्यों को धन्यवाद देता हूँ ।

जोहार